

मुद्रा का आय-व्यय सिद्धांत*

(Income-Expenditure Theory of Money)

1. भूमिका (INTRODUCTION)

मुद्रा का पुराना परिमाण सिद्धांत त्रुटिपूर्ण है क्योंकि यह मुद्रा पूर्ति और समस्त मांग में प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करता है। परिमाण सिद्धांतवादियों के अनुसार, मुद्रा पूर्ति में वृद्धि से वस्तुओं और सेवाओं की समस्त मांग बढ़ जाती है। इसके विपरीत मुद्रा पूर्ति में कमी से वस्तुओं और सेवाओं की समस्त मांग में कमी होती है। यह मुद्रा की मात्रा में वृद्धि ही है जो वस्तुओं और सेवाओं की समस्त मांग में वृद्धि करके कीमतों में बढ़ोतरी करती है और दूसरी ओर मुद्रा की मात्रा के कम हो जाने से वस्तुओं की सेवाओं की मांग कम होने के परिणामस्वरूप कीमतों में कमी हो जाती है। परन्तु महामंदी के दौरान अनुभव हुआ कि मुद्रा पूर्ति में वृद्धि से समस्त मांग में वृद्धि नहीं हुई।

आय सिद्धांत को क्रमशः टुके, विकसेल और एफ्टेलियन द्वारा और अंतिम रूप से केन्ज़ द्वारा विकसित किया गया। उनके अनुसार मुद्रा पूर्ति की अपेक्षा आय परिवर्तन से समस्त मांग में परिवर्तन होता है। जब आय बढ़ती है तो वस्तुओं और सेवाओं की समस्त मांग भी बढ़ जाती है। लोग अधिक व्यय करते हैं और कीमत-स्तर बढ़ जाता है। इसके विपरीत आय गिरने से समस्त मांग में भी गिरावट आ जाता है। लोग कम व्यय करते हैं और कीमत-स्तर गिर जाता है। इसलिए, अर्थव्यवस्था में कीमत स्तर में परिवर्तन व्यय की मात्रा पर निर्भर करता है, जो आगे आय-स्तर में होने वाले परिवर्तन द्वारा निर्धारित होता है। और आय-स्तर अर्थव्यवस्था में होने वाली बचत तथा निवेश की मात्रा पर निर्भर करता है। इस प्रकार, कीमत स्तर अथवा मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन, लोगों की आय और व्यय अथवा बचत एवं निवेश की मात्रा द्वारा होता है। अतः आय और व्यय एवं बचत निवेश आय सिद्धांत के दो दृष्टिकोण हैं जिनकी हम नीचे चर्चा करेंगे।

2. आय-व्यय दृष्टिकोण (INCOME-EXPENDITURE APPROACH)**

कीमतों के आय सिद्धांत में एक और आय एवं समस्त मांग का विश्लेषण तथा दूसरी ओर लागतों एवं

* इसे आय सिद्धांत अथवा बचत-निवेश सिद्धांत भी कहते हैं।

** विद्यार्थियों द्वारा केवल पूछे गए दृष्टिकोण के बारे में ही बताना चाहिए।

समस्त पूर्ति का विश्लेषण किया जाता है। कीमतों का निर्धारण मुद्रा आय और वास्तविक आय द्वारा किया जाता है।

कुल मुद्रा आय (Y) किसी समयावधि में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है जिसे मुद्रा के रूप में व्यक्त किया जाता है। उत्पादन के साधनों को मुद्रा के रूप में भुगतान किए गए पारिश्रमिक द्वारा निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक अवधि के दौरान वस्तुओं और सेवाओं पर किये गए कुल व्यय (E) की राशि को भी व्यक्त करता है। दूसरी ओर, "वास्तविक आय से तात्पर्य किसी अवधि में उत्पादित वास्तविक वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य से है। इसे एक विशेष वर्ष को आधार मान कर उसके सामान्य कीमत स्तर के रूप में वस्तुओं और सेवाओं के कुल मुद्रा मूल्य द्वारा निर्धारित किया जाता है।" इस प्रकार वास्तविक आय का मुद्रा मूल्य ही मुद्रा आय है जिसे वस्तुओं और सेवाओं अथवा उत्पादन की कीमतों द्वारा निर्धारित किया जाता है।

प्रतीक रूप में

$$Y = P \cdot O$$

यहां Y मुद्रा आय अथवा मुद्रा व्यय है जो आय के प्रवाह को उत्पन्न करता है, P कीमतों का सामान्य स्तर है, और O उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की वास्तविक मात्रा है। इस प्रकार, कीमत स्तर,

$$P = Y/O$$

इसका अभिप्रायः यह है कि कीमतों का निर्धारण कुल उत्पादन से मुद्रा आय के अनुपात द्वारा किया जाता है। जब उत्पादन (O) की अपेक्षा मुद्रा आय (Y) अधिक तेजी से बढ़ती है तो कीमतों (P) में बढ़ने की प्रवृत्ति होगी। यदि दूसरी ओर मुद्रा आय (Y) की अपेक्षा उत्पादन (O) अधिक तेजी से बढ़ता है तो कीमतों (P) में गिरने की प्रवृत्ति होगी।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि कुल मुद्रा आय (Y) कुल व्यय के बराबर होती है, और कुल व्यय उपभोग व्यय (C) जमा निवेश व्यय (I) के बराबर होता है। इसलिए $Y = E = C + I$

केन्ज़ के अनुसार, यह कुल मुद्रा आय है जो लोगों के कुल व्यय को निर्धारित करती है। मुद्रा आय में वृद्धि से अभिप्रायः निवेश व्यय में वृद्धि है क्योंकि अल्पकाल में उपभोग प्रवृत्ति स्थिर होती है। बड़े हुए निवेश से प्रभावी मांग बढ़ जाएगी और प्रभावी मांग में वृद्धि से उत्पादन और रोजगार में वृद्धि होगी। परन्तु कीमतों का क्या होगा? जब तक बेरोजगारी होती है, तब तक उत्पादन बढ़ने से भी कीमतों में वृद्धि नहीं होती है। इसका कारण यह है कि साधनों की पूर्ति पूर्णतया लोचशील है। इसलिए उत्पादन में होने वाला परिवर्तन मुद्रा की मात्रा में होने वाले परिवर्तन के बराबर होगा और कीमतों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जब साधनों की पूर्ति गैर-लोचशील होती है (या साधनों की पूर्ति कम है) तो इससे सीमान्त लागतों और कीमतों में वृद्धि होती है। जब पूर्ण रोजगार हो जाता है, तो उत्पादन की पूर्ति की लोचशीलता शून्य हो जाती है (पूर्णतया लोचरहित) और कीमतों में वृद्धि मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि के अनुपात में होती है। इस प्रकार, आय सिद्धांत यह बताता है कि मुद्रा की मात्रा में वृद्धि मुद्रा आय और समस्त व्यय में होने वाली वृद्धि पर निर्भर करती है और जब पूर्ण रोजगार की स्थिति पर पहुंच रहे होते हैं, तो कीमतें बढ़नी शुरू हो जाती हैं। एक बार पूर्ण रोजगार के स्तर पर पहुंच जाते हैं तो कीमतें उसी अनुपात में बढ़ती हैं जिस अनुपात में मुद्रा आय और समस्त व्यय में वृद्धि होती है।

3. बचत-निवेश दृष्टिकोण (SAVING-INVESTMENT APPROACH)

भूमिका (Introduction)

केन्द्रीय आय-व्यय सिद्धांत का एक विकल्प आय सिद्धांत का बचत-निवेश दृष्टिकोण है। वास्तव में आय-व्यय ($Y=C+I$) बिल्कुल बचत-निवेश दृष्टिकोण की तरह है। बचत (S) और निवेश (I) दोनों को उपभोग पर आय के आधिक्य ($Y-C$) के रूप में परिभाषित किया गया है, ताकि वे आवश्यक रूप से बराबर हों। प्रतीक स्वरूप,

$$S = Y - C$$

$$I = Y - C$$

$$\therefore S = I$$

केन्द्र ने इस समानता को दूसरे रूप में प्रस्तुत किया है। उसने आय को उपभोग जमा निवेश ($Y=C+I$) के बराबर और बचत को उपभोग पर आय के आधिक्य ($Y-C$) के रूप में परिभाषित किया है। इस प्रकार,

$$Y = C + I \quad \text{अथवा} \quad I = Y - C$$

$$S = Y - C$$

$$\therefore S = I$$

सिद्धांत (The Theory)

हमने ऊपर देखा है कि बचत और निवेश के बीच की समानता को आय की यान्त्रिकी द्वारा लाया जाता है। दूसरी ओर, बचत और निवेश के संबंधों पर आय निर्भर करती है। जब तक बचत और निवेश बराबर हैं तब तक आय-स्तर का संतुलन होगा और कीमत-स्तर स्थिर होगा। यदि बचत और निवेश में कोई असंतुलन होता है तो व्यय में परिवर्तन के जरिए कीमत स्तर में भी परिवर्तन हो जाता है।

यदि बचत से निवेश से अधिक हो जाती है तो इसका अर्थ यह है कि लोगों का वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय कम हो गया है। वे मुद्रा-राशि का अधिक संग्रह और खर्च कम कर रहे हैं। इससे मुद्रा के चलन की गति कम हो जाती है। इससे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादकों की आय कम हो जाती है। कम व्यय और आय से कीमत-स्तर में गिरावट आ जाती है। जब कीमतें गिरती हैं तो पूंजी की सीमांत उत्पादकता के गिरने से निवेश में भी कमी आती है। जिसके परिणामस्वरूप आय, रोजगार, उत्पादन और कीमतों में गिरावट आती है। यह प्रक्रिया मंदी के निम्नतम स्तर पर पहुँचने तक जारी रहती है।

यदि निवेश बचत से अधिक हो जाता है, तो लोग वस्तुओं और सेवाओं पर अपना व्यय बढ़ा देते हैं। वे खर्च अधिक और बचत कम करते हैं। इससे मुद्रा चलन की गति बढ़ जाती है। इससे वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादकों की आय बढ़ती है। व्यय और आय बढ़ने से कीमत स्तर बढ़ जाता है।

इससे लाभ की आशाएँ अथवा पूंजी की सीमान्त उत्पादकता बढ़ जाएगी। इसके परिणामस्वरूप, निवेश और बढ़ जाएगा और यह निवेश रोजगार, आय, व्यय, उत्पादन को और भी उच्चस्तर पर ले जाएगा। परन्तु निवेश वृद्धि से समस्त व्यय, मांग और आय में होने वाली वृद्धि से कीमतें एक दम से नहीं बढ़ जाती हैं। जब तक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन उसी अनुपात में बढ़ता है तब तक

कीमत स्तर में सामान्य वृद्धि नहीं होगी। यदि उत्पादन आनुपातिक रूप से नहीं बढ़ता है तो निवेश की वृद्धि से आय और कीमत स्तर में बढ़ोतरी हो जाती है। परन्तु उत्पादन में वृद्धि तभी संभव है जब अर्थव्यवस्था में अप्रयुक्त संसाधन हों। जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रोजगार के स्तर पर पहुंचती है तो आय में और वृद्धि से उत्पादन, समस्त व्यय में हुई वृद्धि के स्तर तक नहीं पहुंच पायेगा। परन्तु इससे कीमत स्तर में होने वाली ऊपरगामी वृद्धि उसी अनुपात में होगी जिस अनुपात में आय में वृद्धि होती है।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि बचत और निवेश में होने वाली असमानता कीमत-स्तर में परिवर्तन लाती है और कीमत-स्तर में होने वाला यह परिवर्तन मुद्रा की मात्रा में होने वाले परिवर्तन के कारण नहीं होता बल्कि आय में होने वाले परिवर्तन के कारण होता है।

4. आय-व्यय (अथवा बचत-निवेश) सिद्धांत की परिमाण सिद्धांत पर श्रेष्ठता (SUPERIORITY OF INCOME-EXPENDITURE (OR SAVING-INVESTMENT) THEORY OVER QUANTITY THEORY)

मुद्रा के आय-व्यय सिद्धांत को मुद्रा के परिमाण सिद्धांत पर निम्न आधार पर श्रेष्ठ माना गया है—

1. व्यापार चक्र की व्याख्या (Explains Business Cycles)—परिमाण सिद्धांत व्यापार-चक्र के उतार-चढ़ाव के दौरान कीमतों में होने वाले परिवर्तन की व्याख्या नहीं कर सकता। यह इस बात की व्याख्या नहीं करता कि मंदी के दौरान मुद्रा की पर्याप्तता पुनः प्रवर्तन (revival) और मुद्रा की कमी तेजी (boom) में असफल क्यों रहती है। आय सिद्धांत परिमाण सिद्धांत से श्रेष्ठ है क्योंकि यह उपरोक्त बात की व्याख्या करता है। बचत-निवेश सिद्धांत के अनुसार जब निवेश बचत से अधिक हो जाता है तो मंदी से उभरकर पुनः प्रवर्तन शुरू हो जाता है। केवल मुद्रा की पूर्ति में होने वाली वृद्धि पुनः प्रवर्तन लाने के लिए पर्याप्त नहीं है। यह लाभ की व्यापार आशाओं (अथवा पूंजी का सीमान्त सिद्धांत) में होने वाली वृद्धि है जो निवेश को प्रोत्साहन देती है और पुनः प्रवर्तन शुरू होता है। दूसरी ओर, केवल मुद्रा पूर्ति में होने वाली कमी के कारण तेजी में ठहराव नहीं आता है। अपितु इसमें ठहराव इसलिए आता है क्योंकि लाभ की आशाओं में होने वाली गिरावट के कारण बचत निवेश से अधिक हो जाती है। अतः लाभ की व्यापार-आशाओं में होने वाले परिवर्तन के कारण निवेश में परिवर्तन चक्रीय उतार-चढ़ाव लाते हैं। क्राउथर ने ठीक ही कहा है, "मुद्रा का परिमाण सिद्धांत व्याख्या करता है जैसे यह सागर की औसत गहराई हो; बचत और निवेश सिद्धांत ज्वार-भाटा को हलचल स्पष्ट करता है।"

2. मुद्रा चलन की गति में परिवर्तनों की व्याख्या (Explains Changes in Velocity of Circulation of Money)—मुद्रा का परिमाण सिद्धांत मुद्रा के चलन में होने वाली गति के परिवर्तनों के कारणों की व्याख्या नहीं करता है। बचत-निवेश सिद्धांत इस मामले में श्रेष्ठ है, क्योंकि ऐसे परिवर्तनों की यह पर्याप्त व्याख्या करता है। जब बचत निवेश से अधिक बढ़ जाती है तो इसका तात्पर्य यह है कि लोग मुद्रा का अधिक संग्रह और कम व्यय कर रहे हैं। इससे मुद्रा के चलन की गति कम हो जाती है। इसके विपरीत, जब निवेश बचत से अधिक हो जाता है तो लोग अधिक व्यय करते हैं, जिस कारण मुद्रा के चलन की गति बढ़ने लगती है। इस प्रकार मुद्रा के चलन की गति में होने वाले परिवर्तनों का कारण बचत और निवेश के संबंध होते हैं।

3. मुद्रा की मात्रा और कीमत-स्तर के बीच कारण-संबंध की व्याख्या (Explains Causal Relationship between Quantity of Money and Price Level)—मुद्रा का परिमाण सिद्धांत मुद्रा की मात्रा और कीमत स्तर में कारण-संबंधों की व्याख्या नहीं करता है। यह दोनों के बीच केवल

प्रत्यक्ष और आनुपातिक संबंधों की व्याख्या करता है। बचत-निवेश सिद्धांत मुद्रा के परिमाण सिद्धांत से इस बात में भी श्रेष्ठ है कि इसके द्वारा ज्ञात होता है कि मुद्रा पूर्ति और कीमत स्तर के बीच वास्तविक संबंध न प्रत्यक्ष है और न ही आनुपातिक। बचत और निवेश के बीच असंतुलन के कारण ही कीमत स्तर में परिवर्तन होता है। मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि से कुछ मात्रा की बचत और कुछ मात्रा को खर्च कर दिया जाता है। यदि निवेश बचत से अधिक होता है तो आय बढ़ जाएगी और इसके परिणामस्वरूप व्यय, उत्पादन, रोजगार और कीमतों में वृद्धि होगी। बचत निवेश से अधिक होने की स्थिति में उपरोक्त के विपरीत स्थिति होगी। इस प्रकार मुद्रा की मात्रा और कीमत स्तर में कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है। क्राउथर के अनुसार, "जैसाकि मुद्रा सिद्धान्त में माना गया है, मुद्रा (मुद्रा का मात्रा) में होने वाले परिवर्तन का कीमत-स्तर पर प्रभाव सामान्य कारण और प्रभाव संबंध न होकर एक अत्यन्त जटिल श्रृंखला प्रक्रिया है।" इसके अलावा, जब मुद्रा की मात्रा बढ़ती है तो कीमत स्तर उसी अनुपात में नहीं बढ़ता है। जब तक अर्थव्यवस्था में अप्रयुक्त संसाधन है, मुद्रा आय में वृद्धि से कीमत स्तर में वृद्धि नहीं होगी, यदि उत्पादन में वृद्धि समस्त मांग में हुई वृद्धि के अनुपात में भी हो। ऐसा तभी संभव है जब संसाधनों पूर्ण रोजगार में हों तो कीमत स्तर में वृद्धि मुद्रा की मात्रा में होने वाली वृद्धि के अनुपात में होगी।

4. बेरोजगारी में लागू (*Applicable in Unemployment*)—मुद्रा का परिमाण सिद्धांत पूर्ण रोजगार की धारणा पर आधारित है। यही कारण है कि यह मुद्रा और कीमत स्तर में प्रत्यक्ष और आनुपातिक संबंध स्थापित करता है। बचत-निवेश सिद्धांत मुद्रा के परिमाण सिद्धांत से श्रेष्ठ है, क्योंकि अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी होने के कारण यह कीमत स्तर पर मुद्रा के प्रभाव का विश्लेषण करता है।

5. अल्पकालीन परिवर्तनों की व्याख्या (*Explains Short-Run Changes*)—बचत-निवेश सिद्धांत मुद्रा के परिमाण सिद्धांत की अपेक्षा अधिक वास्तविक है क्योंकि यह मुद्रा के मूल्य में अल्पकालीन परिवर्तनों की व्याख्या करता है जबकि मुद्रा का परिमाण सिद्धांत दीर्घकालीन परिवर्तनों की व्याख्या करता है। यह अवास्तविक है क्योंकि दीर्घकाल में हम सभी मृत होते हैं।

6. मौद्रिक और वास्तविक दोनों कारकों पर विचार (*Considers both Monetary and Real Factors*)—बचत-निवेश सिद्धांत मुद्रा के परिमाण सिद्धांत से इस बात में श्रेष्ठ है कि यह मुद्रा के मूल्य का निर्धारण करने में मौद्रिक और वास्तविक दोनों घटकों पर विचार करता है। बचत, निवेश, समस्त उत्पादन जैसे घटकों को मुद्रा की मात्रा और समस्त व्यय के साथ लिया जाता है। यह आय सिद्धांत को मुद्रा के परिमाण सिद्धांत से बेहतर सिद्ध करता है।

7. नीति निहितार्थ (*Policy Implications*)—बचत-निवेश के नीति निहितार्थ मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त की अपेक्षा अधिक यथार्थवादी हैं। मुद्रा का परिमाण सिद्धांत केवल मुद्रा नीति पर ध्यान देता है। दूसरी ओर, बचत-निवेश सिद्धांत व्यय और आय पर अधिक जोर देता है जिससे आर्थिक गतिविधियों पर मुद्रा की मात्रा की अपेक्षा अधिक प्रभाव होता है। 1950 से मौद्रिक नीति पर आय (राजकोषीय) नीति के प्रभुत्व से यह सिद्ध हो गया है।

हम क्राउथर के इस निष्कर्ष से सहमत होंगे कि "बचत-निवेश सिद्धांत पर्याप्त रूप से परिमाण सिद्धांत की अपेक्षा वस्तुओं की वास्तविकता के निकटतर है। इससे उन मूल प्रवृत्तियों का पता चलता है जिनकी मुद्रा और कीमत के व्यवहार लक्षण की सतह मात्र है।" *उन्हें के श्रेष्ठ है*